बाल भारती पब्लिक स्कूल, पीतमपुरा, दिल्ली ११००३४

हिंदी

कक्षा- IX

E-lesson

प्रिय विद्यार्थियो!

आज हम स्पर्श भाग-I में संकलित बचेंद्री पाल द्वारा लिखित 'एवरेस्ट: मेरी शिखर यात्रा' के विषय में बात करेंगे।

पाठ्य सामग्री अध्ययन करते समय निम्नलिखित निर्देशों का पालन करें ---

निर्देश:

1. उपर्युक्त पाठ के अध्ययन के लिए निम्नलिखित लिंक का प्रयोग कीजिए।

   https://www.youtube.com/watch?v=BbBeaeCSz-c

2. **एवरेस्ट: मेरी शिखर यात्रा (पाठ PDF)**
   https://drive.google.com/open?id=1OsSHnzrclkc9fO7LNIP0TfsrMR5w1NJ7

3. विद्यार्थी पाठ से सम्बंधित प्रश्न हिंदी की उत्तर पुस्तिका (नोटबुक) में करेंगे।

4. स्कूल खुलने के पश्चात् दिए गए अभ्यास प्रश्नों का परीक्षण करके अंक/ग्रेड दिए जायेंगे।

BBPS.PITAMPURA

एवरेस्ट: मेरी शिखर यात्रा

- पाठ का सार

बचेंद्री पाल पर्वतारोही दल की एक सदस्य के रूप में एवरेस्ट अभियान पर निकली। लक्ष्य था एवरेस्ट की चोटी पर पहुँचना। दिल्ली से काठमांडू तक की हवाई यात्रा के बाद यह दल नमचे बाज़ार, शेरपा लैंड पहुँचा। यहाँ के नेपाली लोग एवरेस्ट को 'सागरमाथा' के नाम से पुकारते हैं। एवरेस्ट ठोस जल यानी पानी का भंडार है। सागर से एवरेस्ट शिखर तक फैले जल की यदि एक मानव आकृति के रूप में कल्पना की जाए तो सागर उस शरीर के पाँव और एवरेस्ट माथा होगा। उन्होंने पहली बार एवरेस्ट को गौर से देखा। उन्हें भारी बर्फ़ का एक बड़ा फूल (प्लूम) दिखाई दिया। यह पर्वत शिखर पर लहराता एक ध्वज जैसा लग रहा था। उन्हें बताया गया कि यह दृश्य शिखर की ऊपरी सतह के आसपास 150 किलोमीटर अथवा इससे भी अधिक की गतिसे हवा चलने के कारण बनता है। बर्फ़ का यह ध्वज १० किलोमीटर या इस से भी लम्बा हो सकता था। शिखर पर जाने वाले प्रत्येक व्यक्ति को दक्षिण-पूर्वी पहाड़ी पर इन तूफानों को झेलना पड़ता था, विशेष कर ख़राब मौसम में। यह सूचना बचेंद्री को डराने केलिए पर्याप्त थी फिर भी उन्होंने हिम्मत नहीं हारी।

एक दिन उनके कैंप में पहले एवरेस्ट विजेता के साथी शेरपा तेनजिंग अपनी छोटी बेटी के साथ आए। उन्होंने दल के सभी सदस्यों से अलग-अलग मुलाकात की। उन से सामना होने पर बचेंद्री ने कहा कि मैं एकदम नौसिखिया हूँ। इसके जवाब में तेनजिंग ने बताया कि वे जब एवरेस्ट पर चढ़े थे तब वह भी नौसिखिया थे चोटी पर पहुँचने से पहले उन्हें सात बार उतरना पड़ा था उन्होंने भरोसा दिलाया कि तुम तो पूरी पर्वतीय लड़की हो तुम पहली बार में ही एवरेस्ट फतह कर लोगी। उनका कथन सत्य सिद्ध हुआ इस अभियान के अंतिम पड़ाव तक आते-आते बचेंद्री दल की इकलौती महिला सदस्य रह गई थी। इस अभियान के दौरान उन्हें कई बार हिमपात का, ग्लेशियरों का,तूफानों का ,पहाड़ियों के खिसकने का ,बर्फ़ की चट्टानों, हिमविदर जैसी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। एक बार वे मरते-मरते बची उनके साथी महिला होने के नाते उनके प्रति कुछ रियायतें बरतना चाहते थे लेकिन बचेंद्री को यह कतई गवारा नहीं था। उन्होंने अन्य सदस्यों के

BBPS,PITAMPURA

समान ही सभी खतरो का डटकर मुकाबला किया। जरूरत पड़ने पर साथियों को मदद भी पहुँचाई । जब वे दक्षिण शिखर के ऊपर पहुँचे तब वहाँ हवा की गति बढ़ गई थी तेज हवा के झोंके भुरभुरी बर्फ के कण चारों तरफ उड़ा रहे थे आसपास का नजारा देखना दूभर हो गया था थोड़ी दूरी पर एक और ऊँची चढ़ाई थी और ढलान एकदम सीधे नीचे चला गया था। उनकी साँस मानो रुक गई थी उन्हें यकायक ये विचार कौंधा कि आपकी सफलता बहुत नजदीक है।

23 मई 1984 का दिन था दोपहर के एक बजकर सात मिनट हुए थे जब बचेंद्री पाल सचमुच एवरेस्ट की चोटी पर खड़ी थी। वे पहली भारतीय पर्वतारोही महिला थी जो एवरेस्ट के शिखर पर खड़ी थी। अपने दल की ओर से भी वे ही सबसे पहले वहाँपहुँची थी। एवरेस्ट की चोटी पर पहुँच कर उन्होंने सबसे पहले फावड़े से कुछ जगह समतल की। घुटनों के बल बैठी बर्फ पर अपना माथा लगाकर सागर माथे के ताज का चुंबन लिया । थैले में से दुर्गा माँ का चित्र और हनुमान चालीसा निकाला। एक लाल कपड़े में लपेटा। छोटी -सी पूजा -अर्चना की औरइन्हें बर्फ में दबा दिया। इस दौरान इन्हें अपने माता-पिता की याद आई। अपने साथियों के पहुँचने पर तिरंगा फहराया। साथी पर्वतारोही ल्हाटू ने इनके हाथ से वॉकी -टॉकी दिया । तब कर्नल खुल्लर ने बचेंद्री पाल को बधाई देते हुए कहा, "मैं तुम्हारी इस अनूठी उपलब्धि के लिए तुम्हारे माता-पिता को बधाई देना चाहूँगा । देश को तुम पर गर्व है और अब तुम ऐसे संसार में वापस जाओगी, जो तुम्हारे अपने पीछे छोड़े हुए संसार से एकदम भिन्न होगा।"

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर कॉपी में लिखिए-

१. एवरेस्ट अभियानदल 7 मार्च को दिल्ली से काठमांडू के लिए हवाईजहाज़ से चल दिया। एक मज़बूत अग्रिम दल बहुत पहले ही चला गया था जिससे कि वह हमारे 'बेस कैंप' पहुँचने से पहले दुर्गम हिमपात के रास्ते को साफ़ कर सके। नमचे बाज़ार, शेरपा लैंड का एक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण नगरीय क्षेत्र है। अधिकाँश शेरपा इसी स्थान तथा यही के आसपास के गॉवों के होते हैं। यह नमचे बाज़ार ही था, जहाँ से मैंने सर्वप्रथम एवरेस्ट को निहारा, जो नेपालियों में 'सागरमाथा' के नाम से प्रसिद्ध है। मुझे यह नाम अच्छा लगा।

BBPS,PRATAMPURA

क) अग्रिम दल पहले क्यों चला गया था? उसकी क्या जिम्मेंदारी थी?

ख) नमचे बाज़ार क्यों महत्त्वपूर्ण माना जाता है?

ग) 'सागरमाथा 'का क्या अर्थ हो सकता है?

२. जब हम 26 मार्च को पैरीच पहुँचे ,हमें हिमस्खलन के कारण हुई एक शेरपा कुली की मृत्यु का दुखद समाचार मिला। खुंभु हिमपात पर जाने वाले अभियान दल के रास्ते के बाईं तरफ़ सीधी पहाड़ी के धसकने से ,ल्होत्से की ओर से एक बहुत बड़ी चट्टान नीचे खिसक आई थी। सोलह शेरपा कुलियों के दल में से एक की मृत्यु हो गई और चार घायल हो गए थे।

इस समाचार के कारण अभियान दल के सदस्यों के चेहरों पर छाए अवसाद को देखकर हमारे नेता कर्नल खुल्लर ने स्पष्ट किया कि एवरेस्ट जैसे महान अभियान में खतरों को और कभी -कभी तो मृत्यु भी आदमी को सहज भाव से स्वीकार करनी चाहिए।

क) अभियान दल को पैरीच पहुँचने पर क्या दुखद समाचार मिला ?

ख) चार कुलियों के घायल होने और एक के मरने का कारण क्या था ?

ग) "महान अभियान में खतरों को ,यहाँ तक कि मृत्यु को भी सहज भाव से लेना चाहिए " आशय स्पष्ट कीजिए।

BBPS.PITAMPURA